❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र




स नो रास्व सुवीर्यम्।। अथर्व० 20/108/3
हे शक्तिदाता प्रभो! आप हमें वीरता प्रदान करें।
O ! the Bostower of power Lord ! Bestow valour on us.


वर्ष 43, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 दिसम्बर, 2019 से रविवार 15 दिसम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh


## 93 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

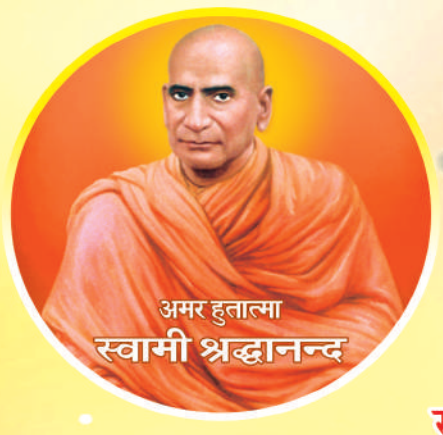




# शोभायात्रा

**बुधवार 25 दिसंबर 2019**

यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

**भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे**

## विशाल सार्वजनिक सभा

इस अवसर पर वैदिक विद्वानों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं को स्मृति पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जायेगा।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी ।

# आर्य समाज के प्रेरणा स्तम्भ – अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

### स्वामी श्रद्धानन्द जी के 93वें बंलिदान दिवस (23 दिसम्बर) पर शत-शत नमन्

*पुण्यभूमि भारत ऋषि मुनियों की भूमि है। यहां समय समय पर मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने के लिए ऋषि-मुनि, योगी, ज्ञानी, सिद्ध- साधक, संन्यासियों ने जन्म लेकर प्रेरणाप्रद लोकोपकारी सेवा कार्य किए हैं। महापुरुषों के जन्म और जीवन की यह श्रंखला इतनी विशाल है कि जिसको शायद ही कोई एक व्यक्ति पूरी तरह से आत्मसात कर पाया हो। किंतु महानता के इस विराट क्रम में 22 फरवरी, 1856 को जालंधर -पंजाब के तलवान ग्राम में श्री नानकचंद विज के घर एक ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ जिन्हें हम स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के नाम से जानते हैं।*

*स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। मानव समाज को अंधेरों से निकालकर सत्य के उजालों की ओर अग्रसर करते-करते 23 दिसम्बर, 1926 को अब्दुल रसीद नाम के कायर व्यक्ति द्वारा धोखे से चलाई गई गोली लगने से वे राष्ट्र एवं मानव सेवा के लिए शहीद हो गए। ऐसे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को उनके 93वें बलिदान दिवस पर शत-शत नमन्, कोटिशः नमन्।*

**लाखों हैं रोज आते, लाखों चले गए, अमृत उन्होंने पाया सेवा के लिए जिए।**
**जब तक रहे धरा पर फूलों की तरह रहे, सेवा-साधना से जीवन धन्य कर गए।।**

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि देव दयानन्द जी के अतिशय और अनन्य भक्त स्वामी श्रद्धानंद का जन्म और जीवन उस रंग-बिरंगे सुगंधित फूल की तरह है जो परोपकार के लिए ही धरा पर जन्म लेता है और परोपकार के लिए ही अपना सर्वस्व न्यौछावर करता है। वह जहां भी जाता है, वहां की शोभा बनता है और जो भी करता है परोपकार के लिए ही करता है। फूल तो हर हाल में, हर काल में और हर स्थिति में हंसते-मुस्कराते हुए, परोपकार करते हुए अपनी विदाई से पहले दूसरे अनेक फूलों को जन्म देकर ही जाता है। संसार में कोई धन से, कोई मन से और कोई तन से सेवा करता है। किंतु स्वामी श्रद्धानंद जी एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने तन, मन, धन और अपना पूरा जीवन यहां तक की अपनी प्यारी संतानों को भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार को समर्पित कर दिया था।

**स्वामी जी द्वारा प्रशस्त सेवा के सोपान**

स्वामी श्रद्धानंद जी के द्वारा किए गए जो लोकोपकारी सेवा के कार्य है उनमें चाहे शुद्धि आंदोलन का महान कार्य हो अथवा पिछड़ों को गले लगाकर उन्हें विधर्मी बनने से रोकने का उदाहरण हो, वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु गुरुकुलों की स्थापना का ऐतिहासिक कार्य हो या देश की स्वाधीनता के आंदोलन में सक्रिय भूमिका का निर्वहन हो अथवा 30 मार्च 1919 को दिल्ली के दिन चांदनी चौक में घंटा घर पर फिरंगियों के सामने अपनी छाती को तानकर निर्भीक स्वर में यह कहना "चलाओ गोली" भारत की जनता पर गोली चलाने से पूर्व तुम्हें इस संन्यासी की छाती को छलनी करना होगा। स्वामी जी की इस उद्घोषणा, हुंकार को सुनकर अंग्रेजी पुलिस उनके सामने नतमस्तक हो गई थी और देश के भोली-भाली जनता के लिए यह असीम प्यार और समर्पण का भावपूर्ण समाचार पूरे देश में आग की तरह फैल गया था। ऐसे महान वीर आर्य संन्यासी का बलिदान दिवस हमें जगाने का ही प्रेरणा पर्व है।

**आर्य समाज के प्रेरणा स्रोत**
**स्वामी श्रद्धानन्द**

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित

- शेष पृष्ठ 6 पर

## वेद-स्वाध्याय

# पाप को वश में करने से सुख प्राप्ति

**अव मा पाप्मन् सृज वशी सन् मृडयासि नः।**
**आ मा भद्रस्य लोके पाप्मन् धेह्यविह्रतम्।।** - अथर्व. 6/26/1
ऋषिः **ब्रह्मा।।** देवता - **पाप्मा।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

**शब्दार्थ - पाप्मन्** = हे पाप! तू **मा** = मुझे **अवसृज** = छोड़ दे, **वशी सन्** = अब मेरे वश में होता हुआ तू **नः** = मुझे **मृडयासि** = सुखी कर दे। **पाप्मन्** = हे पाप! तू अब **अविह्रतम्** = कुटिलतारहित, सरल बने **मा** = मुझे **भद्रस्य लोके** = कल्याण के लोक में **आ धेहि** = स्थापित कर दे।

**विनय**-हे पाप! तू अब मुझे छोड़ दे। तूने मुझे बहुत देर अपने वश में रखा, अब तो मेरा तुझे वश में करने का समय आ गया है। तेरे वशीभूत होकर मैंने बहुत दुःख पाये, अब तो मेरे सुख पाने का समय आ गया है। हे पाप! तुझसे पाये दुःख ही अब मेरे सुख के कारण हो जाएँ। यह तो ईश्वरीय नियम है कि दुःख के बाद सुख आते हैं और पाप की प्रतिक्रिया में पुण्य का प्रादुर्भाव होता है। अब तो उस प्रतिक्रिया का समय आ गया है। तुझसे दुःख पा-पाकर आज मैं सीधा हो गया हूँ, अकुटिल हो गया हूँ। मेरी कुटिलता, टेढ़ापन, झूठ, पाखण्ड ये सब मुझे तुझ पाप की ओर ले-जानेवाले थे, पर आज अकुटिल, सरल, सीधा, सच्चा होकर मैं तो अब भद्र के लोक की ओर चल पड़ा हूँ। हे पाप! यदि मैं तुझमें ग्रस्त होकर इतना न भटकता, इतना दुःख न पाता तो मैं कभी भी कुटिलता की, असत्य जीवन की बुराई को अनुभव न कर पाता और कभी पुण्य का सच्चा पुजारी न बन सकता। इस तरह हे पाप! तू ही आज मुझे भद्र के लोक में स्थापित कर रहा है। हे पाप! तू अब अकुटिल हुए मुझे कल्याण के लोक में पहुँचा दे। मैं जितना पक्का बेशर्म-पापी था उतना ही कट्टर, दृढ़, सच्चा, पुण्यात्मा मुझे बना दे। जितना ही गहरा मैं पाप के गर्त्त में गया हुआ था उतना ही ऊँचा तू मुझे पुण्य के लोक में स्थिर कर दे।

**साभार :- वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

## सम्पादकीय

### नागरिक संशोधन बिल संसद के दोनों सदनों में हुआ पारित : हार्दिक बधाई

# क्या यह बिल भारत को इजराइल बना देगा?

***.....कई लाख हिन्दू कश्मीर में अमानवीय स्थितियों में रहने के लिए विवश हैं। इन लोगों में एक बड़ा वर्ग बंटवारे के समय पश्चिम पाकिस्तान से आए उन हिंदुओं का है, जिन्हें भौगोलिक दूरी के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप से जम्मू अपने ज्यादा नजदीक लगा और वे यहीं आकर अस्थायी तौर पर बस गए। यहां रहने वाले ज्यादातर लोगों ने शुरुआत में सोचा होगा कि वे समाज की मुख्य धारा में शामिल हो जाएंगे। लेकिन साल दर साल गुजरते गये उस समय पाकिस्तान से आया एक वर्ष का बच्चा आज 71 वर्ष का बुजुर्ग हो गया पर उसे नागरिकता नहीं मिली।.....***

हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नागरिकता संशोधन विधेयक को हरी झंडी दे दी है और संभावना है कि इसे जल्दी ही संसद में पेश किया जाएगा। इस विधेयक में पड़ोसी देशों से शरण के लिए भारत आए हिंदू, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी और ईसाई समुदाय के लोगों को भारतीय नागरिकता देने का प्रावधान है। हालांकि इस बिल को लेकर विपक्ष बेहद कड़ा रुख अख्तियार कर रहा है और इसे संविधान की भावना के विपरीत बता रहा है। जहाँ केंद्र की तरफ से इसे शीर्ष प्राथमिकता देते हुए सदन में रखे जाने के दौरान सभी सांसदों को उपस्थित रहने को कहा गया है। वहां ओवैसी समेत विपक्ष के कई नेताओं का कहना है अगर नागरिकता संशोधन विधेयक लागू किया गया तो यह बिल भारत को इसराइल बना देगा।

आखिर इस बिल में ऐसा क्या है जो ओवैसी समेत विपक्ष को इतना एतराज है? अगर इस बिल को आसान भाषा में देखें तो इस विधेयक में पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में धार्मिक आधार पर उत्पीड़न के शिकार गैर मुस्लिम शरणार्थियों जिनमें हिंदू, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी और ईसाई समुदाय के लोगों को भारत की नागरिकता दिए जाने का प्रावधान है। नागरिक संशोधन विधेयक 2019 के तहत सिटिजनशिप ऐक्ट 1955 में बदलाव का प्रस्ताव है। इस बदलाव के जरिए उन गैर मुस्लिम शरणार्थियों को नागरिकता दी जाएगी जो बीते एक साल से लेकर छह साल तक भारत में रह रहे हैं।

दूसरा फिलहाल, भारत में लागू सिटिजनशिप ऐक्ट 1955 के तहत नागरिकता हासिल करने की अवधि 11 साल है। यानि यदि आप ग्यारह साल से भारत में रह रहे हैं तो आपको यहाँ की नागरिकता मिल सकती है लेकिन अब इसी नियम में ढील देकर नागरिकता हासिल करने की अवधि को एक साल से छह साल तक किया जाना है। मतलब कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश में सताये हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी समुदाय के लोग अगर भारत में आते हैं तो उन्हें एक साल के अंदर यहाँ की नागरिकता मिल जाएगी।

इसका सबसे बड़ा लाभ होगा बंटवारे में पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आये और जम्मू कश्मीर में बसे हिन्दुओं को जो पिछले 70 वर्षों से नागरिकता की बाट जोह रहे है। क्योंकि कई लाख हिन्दू कश्मीर में अमानवीय स्थितियों में रहने के लिए विवश हैं। इन लोगों में एक बड़ा वर्ग बंटवारे के समय पश्चिम पाकिस्तान से आए उन हिंदुओं का है, जिन्हें भौगोलिक दूरी के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप से जम्मू अपने ज्यादा नजदीक लगा और वे यहीं आकर अस्थायी तौर पर बस गए। यहां रहने वाले ज्यादातर लोगों ने शुरुआत में सोचा होगा कि वे समाज की मुख्य धारा में शामिल हो जाएंगे। लेकिन साल दर साल गुजरते गये उस समय पाकिस्तान से आया एक वर्ष का बच्चा आज 71 वर्ष का बुजुर्ग हो गया पर उसे नागरिकता नहीं मिली। वो भी उस अंतर्राष्ट्रीय कानून के होते जिसमें अगर कोई महिला जहाज में सफर करते समय बच्चा पैदा करती है तो उस बच्चे को उस इलाके की नागरिकता हासिल करने का हक मिलता है, जहाँ से जहाज गुजर रहा होता है। ये लोग तो 70 साल से ज्यादा समय से जम्मू और कश्मीर में रह रहे हैं इन्हें क्यों नागरिकता के अधिकार से वंचित रखा गया है? जबकि इसके विपरीत बांग्लादेश से भारत में शरण लेकर लाखों की संख्या में मुस्लिम शरणार्थी यहाँ की नागरिकता हासिल कर चुके हैं।

विरोध का कारण यही हो सकता है क्योंकि इस बिल के लागू हो जाने पर अवैध रूप से भारत में बसे बंगलादेशी रोहिंग्या मुस्लिमों को अपने देश लौटना होगा। साल 1991 में असम में मुस्लिम जनसंख्या 28.42 प्रतिशत थी जो 2001 के जनगणना के अनुसार बढ़ कर 30.92 प्रतिशत हो गई और 2011 की जनगणना में यह बढ़कर 35 प्रतिशत को पार कर गयी। बांग्लादेशी मुस्लिमों की एक बड़ी आबादी ने देश के कई राज्यों में जनसंख्या असंतुलन को बढ़ाने का काम किया है।

दूसरा बांग्लादेश से आए लोग पश्चिम बंगाल में आकर बसे हैं। बॉर्डर मैनेजमेंट टास्क फोर्स की वर्ष 2000 की रिपोर्ट के अनुसार 1.5 करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठ कर चुके हैं और लगभग तीन लाख प्रतिवर्ष घुसपैठ कर रहे हैं। इस हिसाब से अगर 2019 का अनुमान लगाया जाये देश में 4 करोड़ घुसपैठिये मौजूद हैं। अगर ये बिल लागू होता है तो बंगाल की राजनीति में बड़ी उथल-पुथल हो सकती है। खासकर बांग्लादेश की सीमा से सटे बंगाल के इलाकों में। क्योंकि असम की तरह यहां भी जनसंख्या में अत्यधिक बढ़ोतरी हुई है। पिछले कई वर्षों में पश्चिम बंगाल के कई इलाकों में हिन्दुओं के ऊपर होने वाले सांप्रदायिक हमलों में बांग्लादेशी घुसपैठियों का ही हाथ रहा है।

यही नहीं इसके अलावा उत्तर पूर्व के राज्य त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड में भी अवैध रूप से बांग्लादेशी रह रहे हैं। इसके अलावा उड़ीसा, त्रिपुरा और छत्तीसगढ़ में भी अवैध रूप से भारत आए बांग्लादेशी रहते हैं। अकेली राजधानी दिल्ली की बात करें यहाँ भी करीब 40 हजार रोहिंग्या मुस्लिमों के अलावा बड़ी संख्या बंगलादेशी अवैध रूप से रह रहे है इनके बाहर निकाले जाने की बात सेकुलर लिबरल वामपंथी कथित सामाजिक कार्यकर्ता हर बार शोर मचा देते हैं।

इस विधेयक को 19 जुलाई, 2016 को लोकसभा में पेश किया गया था। 12 अगस्त, 2016 में इस विधेयक को संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजा गया था। समिति की रिपोर्ट आने के बाद 08 जनवरी, 2019 को विधेयक को लोकसभा में पास किया गया। लेकिन राज्यसभा में इसे पेश नहीं किया जा सका था। बहरहाल, मुश्किल वाली बात यह है कि असम और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में इस विधेयक के खिलाफ लोगों का बड़ा तबका प्रदर्शन कर रहा है। मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का कहना है कि ये विधेयक भारत के संविधान के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है। धर्म के आधार पर किसी को नागरिकता नहीं दी जा सकती। भाजपा इस विधेयक के जरिए हिंदूत्व का एजेंडा मजबूत करना चाहती है।

***- सम्पादक***

**वैदिक शगुन लिफाफे**

**महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में**

| सिक्के वाले | बिना सिक्के |
|---|---|
| मात्र 500/-रु. सैंकड़ा | मात्र 300/-रु. सैंकड़ा |

**प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली**
**दूरभाष : 011-23360150, 09540040339**

**जघन्य अपराधों से जुड़ी न्याय व्यवस्था पर एक नजर**

# बलात्कार और न्याय : क्या सही–क्या गलत?

***.....क्या कल जब कोई राजनितिक दलों से जुडा नेता या कथित धार्मिक गुरु या बाबा बतौर अपराधी पकड़ा जायेगा तो क्या उसके लिए भी यही माहौल होगा? शायद नहीं! क्योंकि आसाराम से लेकर राम रहीम, रामपाल हो या नित्यानंद रहा हो हमने समाज और राजनीति को बंटते हुए उनके लिए मरते हुए देखा है। इसलिए हैदराबाद के न्याय पर जश्न जरुर मनाइए लेकिन उससे अधिक एक सामाजिक माहौल का निर्माण कीजिये, जिसमें बलात्कारी और उसके परिवार का सामाजिक बहिष्कार किया जाये। पीड़िता का साथ दीजिये, हमें न्याय, स्वतंत्रता और एक सभ्य समाज को गरिमा प्रदान करने के लिए इस विषय पर गंभीरता से सोचता ही होगा क्योंकि इसका और कोई विकल्प नहीं है।.....***

इन दिनों तीन बड़े रेप को लेकर भारत में चर्चा है पहला निर्भया जिसे इस 16 दिसम्बर को सात वर्ष हो जायेंगे इस जघन्य रेप और हत्याकांड के सभी आरोपियों को फांसी सजा सुनाई जा चुकी है। दूसरा हैदराबाद में पिछले दिनों एक महिला डॉक्टर के साथ बर्बरता का किस्सा सभी का जुबानी है। और तीसरा उन्नाव में एक महिला के रेप के आरोपियों ने पीड़ित महिला की आग लगाकर हत्या का मामला भी देश की संसद तक गूंज रहा है।

जहाँ लगातार इन जघन्य अपराधों को लेकर सोशल मीडिया और राजनीति में लगातार रोष मचा हुआ है, वहां इन अपराधों की सजा पर सवाल भी खड़े हो रहे हैं। सवाल इसलिए क्योंकि 6 दिसम्बर की सुबह जब हम जगे तो एक चौंकाने वाली खबर मिली थी कि पिछले हफ्ते हैदराबाद में महिला डॉक्टर से सामूहिक बलात्कार और उसे जलाकर मारने वाले सभी चार अभियुक्तों को पुलिस ने मार गिराया। पुलिस का कहना था कि चारों अभियुक्त क्राइम सीन से भागने की कोशिश में मारे गए। अपराध को रिक्रिएट करने के लिए अभियुक्तों को रात में क्राइम सीन पर ले जाया गया था।

इस घटना पर राजनीति और समाज बंटे-बंटे से नजर आये एक ओर जहाँ एक बड़े जनसमूह का मानना यह है कि अपराधियों को तत्पर सजा मिल गयी चाहें उसका तरीका जो भी रहा हो। वहां दूसरी तरफ कुछ लोगों का यह भी मानना है यदि अपराध न्यायलय में साबित नहीं हुआ तो मारे गये आरोपी अपराधी कैसे हुए?

व्यक्तिगत तौर यदि कहा जाये तो हम हैदराबाद पीड़िता और उनके परिजनों के लिए बहुत दु:खी हैं। लेकिन उतना ही गोपू और उनके परिवार के लिए भी बेहद दु:खी है जिनकी गर्भवती पत्नी की आसिफाबाद गैंग रेप के बाद हत्या कर दी गई। गोपू की पत्नी की हत्या, हैदराबाद पीड़िता की हत्या से ठीक तीन दिन पहले हुई थी। गोपू की पत्नी उम्र में हैदराबाद पीड़िता से तीन साल बड़ी थीं। वो एक बंजारा समुदाय से ताल्लुक रखती थीं जो दिहाड़ी मजदूरी और छोटे-मोटे सामान बेचकर जिंदगी बसर करता है। यह खबर सोशल मीडिया का हिस्सा नहीं बनी इस कारण यह दब कर रह गयी।

अब यदि इन सब अपराधों को न्याय की तराजू में रखकर देखा जाये तो सभी में रेप और हत्या का मामला निकलकर आता है किन्तु तुलनात्मक अध्यन में सभी अलग-अलग आते हैं। बात को निर्भया से शुरू करें तो 16 दिसम्बर 2012 की रात निर्भया एक बस में चढती है जिसमें सभी अपराधी शराब के नशे में थे। अश्लील फब्तियों से लेकर शुरू हुआ एक अपराध अपने दर्दनाक अंजाम तक पहुंचता है और पीडिता चार दिन बाद दम तोड़ देती है। यानि इसमें कुछ भी योजनाबद्ध नहीं था। किन्तु हैदराबाद मामले में पूरा घटनाक्रम पुलिस की माने तो योजना बनाकर किया गया था। अपराधी पहले से जानते थे कि महिला डॉक्टर कहाँ अपनी स्कूटी खड़ी करती है उसे जानबूझकर पंक्चर किया गया फिर मदद के बहाने उसके साथ चले और अंत में इस अपराध को तयशुदा योजना के अनुसार अंजाम तक पहुंचा दिया।

तीसरा उन्नाव केस इसमें भी रेप पीड़ित एक महिला को जलाकर मारा गया। यदि इस मामले को देखें तो पीडिता का आरोपी पडोस के लडके से प्रेम प्रसंग था। दोनों ने काफी वक्त साथ गुजारा परिवारजनों से छिपकर विवाह भी रचाया। किन्तु जब मामला गाँव में उछला तो आरोपी लडके ने विवाह न होने से मना कर दिया तत्पश्चात पीड़िता ने रेप का मुकदमा दायर किया। आरोपी जेल गया, जमानत पर रिहा हुआ और पीडिता की जलाकर हत्या कर दी।

यानी तीनों मामलों का अंजाम एक था लेकिन आगाज अलग अलग थे। न्याय के नजरिये से यदि इनका विश्लेषण किया जाये उन्नाव और निर्भया मामला अलग है और हैदराबाद मामला योजनाबद्ध था। हालाँकि हैदराबाद पीड़िता हो या उन्नाव यह सब उन तमाम महिलायों में से हैं जिन्हें बलात्कार के बाद बर्बरतापूर्वक मार दिया गया। ये सब तब हुआ जब भारत में बलात्कार के लिए संशोधित और कड़े कानून हैं, फास्ट ट्रैक अदालते हैं और पूरी कानूनी प्रक्रिया है।

समाज में बर्बर हत्याएं असहनीय होती हैं। ये सब ऐसे अपराध हैं, जो बर्दाश्त नहीं किए जाते। लेकिन हमें देखना होगा कि हम अपना दुख और गुस्सा किस तरीके से व्यक्त कर रहे हैं। तरीका ऐसा होना चाहिए जो दुख को कम करने में मदद करे। हमने बलात्कार के विरुद्ध कड़े कानून की मांग की। हमें कड़े कानून मिले भी। लोगों के गुस्से और तीव्र विरोध प्रदर्शनों को देखते हुए वर्ष 2013 में जस्टिस वर्मा समिति बनी और नए कानून आए। इसलिए ये समझना जरूरी है कि दिल्ली निर्भया गैंगरेप के परिवार का संघर्ष बेकार नहीं गया। लेकिन हैदराबाद फैसला फटाफट आया और जन भावनाओं के अनुरूप आया लेकिन सवाल यह भी है क्या पुलिस ऐसे लोगों को साथ भी ऐसा सुलूक कर सकती है जिनकी पहुँच ऊपर तक होती है?

*- शेष पृष्ठ 7 पर*

**प्रेरक प्रसंग**

## ऋषि दयानन्द रणक्षेत्र में

***गतांक से आगे*** -

इन सबके मध्य महर्षि दयानन्द का एक सुन्दर चित्र रक्खा गया। यह इतना सुन्दर था कि सब दर्शकों को आकर्षित कर रहा था। इस अद्‌भुत विचित्र चित्र का गौरव वर्णन से बाहर था।

आश्चर्य तो यही हो रहा था कि यह चित्र आया कहाँ से? कारण किसी भी सैनिक के पास प्यारे ऋषि का चित्र न था। आर्यवीरों ने वेद की पवित्र ऋचाओं से यज्ञ-हवन किया। भजन हुए, उपासना कराई गई। सबमें उत्साह था। भ्रातृभाव, राष्ट्रीय भाव तथा धर्मभाव ऐसा था कि लेखनी उसका वर्णन करने में अक्षम है। प्रतीत होता था कि श्रद्धा सजीव होकर झूम रही है।

वैसे तो महर्षि के बलिदान के पश्चात् जब लण्डन में श्री लक्ष्मीनारायण बैरिस्टर व लाला रौशनलाल आदि ने आर्यसमाज स्थापित किया तब से यज्ञ-हवन वहाँ होता ही था। वेद की ऋचाओं से वहाँ का वातावरण सुवासित होता ही था, परन्तु इस यज्ञ के करनेवाले सब क्षत्रिय थे। इन लोगों ने जिस जोश से, जिस श्रद्धा से और जिस उमंग से यज्ञ किया, वह अपना उदाहरण आप ही था। ऐसा लगता था कि सारे यूरोप का वायुमण्डल वेदमन्त्रों से गूँज उठा है।

फिर वही प्रश्न उठता है कि ऋषि का चित्र कहाँ से आया? सेना में जाट, राजपूत, वैश्य, शूद्र व ब्राह्मण सब लोग थे। इन्हीं में कोई आर्यवीर चित्रकारी जानता था। यह किसी ऐसे आर्यवीर की श्रद्धा का चमत्कार था। तीन घण्टे तक उत्सव चलता रहा। सन्ध्या के समय प्रीतिभोज के लिए हलवा परोसा गया। फिर उत्सव समाप्त हुआ।

पुराने आर्यों ने जान जोखिम में डालकर, विपरीत परिस्थितियों में, जहाँ भी गये, जो भी कार्य करते थे, सबने अपने-अपने स्थान ऋषि-मिशन का डंका बजाया। आज का आर्यसमाजी स्कूलों-कॉलेजों के नीचे मिशन को दबाकर पूर्वजों की भावनाओं की हत्या करने पर तुला है तो भी ऋषि का कार्य रुकेगा नहीं। परमेश्वर की वेद-वाणी का झण्डा थामनेवाले, वेद का प्रचार करनेवाले और जन आगे आ जाएँगे।

उन साहसी आर्यवीरों का नाम व काम का स्मरण करते हुए हम आगे बढ़ें।

*- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

*साभार :*

*तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी*

*तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

**बढ़ते अपराध पर कैसे लगे अंकुश? एक सकारात्मक चिन्तन**

# आन्तरिक परिवर्तन से सम्भव होगा समाज में बदलाव

***आर्य संदेश के पिछले अंक में हमने समाज में बढ़ रही निरंतर अपराधिक मानसिकता को ध्यान में रखकर "आंतरिक परिवर्तन से संभव होगा समाज में बदलाव" शीर्षक लेख प्रकाशित किया था। इस लेख में हमने आदतों का निर्माण कैसे होता है, समाज में अपराधिक मानसिकता कैसे पनपती है, मनुष्य के मन में हिंसा का बीजारोपण कैसे होता है आदि बिंदुओं पर प्रकाश डाला था। अब आगे.....***

**गतांक से आगे -**

**मनुष्य को सोचना चाहिए**

वस्तुत: आधुनिक परिवेश में मनुष्य की स्थिति कुछ ऐसी होती जा रही है कि उसे पता ही नहीं है कि वह कहां जा रहा है, क्यों जा रहा है, इसका परिणाम क्या होगा? आज का मनुष्य बस चले जा रहा है, चले जा रहा है, क्या उद्देश्य है, इससे अंजान होकर बहते समय के प्रवाह में बहे जा रहा है।एक व्यक्ति रेलवे स्टेशन पर जाकर टिकट मास्टर से कहता है कि टिकट दे दीजिए, टिकट मास्टर ने पूछा कि कहां जाना है? उसने कहा बस आप टिकट दीजिए, ये क्यों पूछ रहे हैं कि कहां जाना है? टिकट मास्टर ने फिर कहा भाई कमाल के आदमी हो, जब तक आप यह नहीं बताओगे कि कहां, किस स्थान पर जाना है, आपकी यात्रा कहां से शुरु होकर कहां तक जाएगी, तो मैं टिकट कैसे काटूंगा? उस मुसाफिर ने कहां कि ये तो मुझे भी नहीं पता कि मुझे कहां जाना है लेकिन यह पता है कि बस जाना है, आप टिकट दे दीजिए इस बात को सुनकर-पढ़कर अजीब तो लगता है, लेकिन सच्चाई यही है कि प्रतिस्पर्धा के युग में मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति समाप्त होती जा रही है। इसलिए अपराध की दुनिया में जाकर भी आदमी को पता ही नहीं चलता कि मैं कहां से चलकर कहां आ गया हूं। इसलिए मनुष्य को यह अवश्य सोचना चाहिए कि मैं कैसा सोचता हूं? कैसा बोलता हूं? कैसा कर्म करता हूं? कहां से चला था? कहां मुझे जाना है? मेरा लक्ष्य और उद्देश्य क्या है?

**बदलाव की संभावना**

विचार कीजिए कि एक मिनट का क्रोध, एक मिनट का उतावलापन, एक मिनट की मदहोशी, या कोई बुद्धि को बिगाड़ देने वाला नशा मनुष्य को जीवन भर के लिए कैदी या मृत्यु दंड का भागीदार बना देता है। अगर एक मिनट से भी कम समय में गुस्से से लबरेज आदमी किसी पर बंदूक से वार करने से पहले सोच ले कि इसका अंजाम क्या होगा? इस अपराध का परिणाम क्या होगा? तो शायद वह अपराधी बनने से बच जाए। इससे भी आगे एक बार गलती करके भी आदमी पश्चाताप कर ले और सुधर जाए तब भी गनीमत है लेकिन इंसान गुनाह पर गुनाह करता जाता है और एक दिन उसके विचार, मानसिकता और बौद्धिक स्थिति उसे यह सोचने पर यह मजबूर कर देती है कि अब तो कुछ नहीं हो सकता, अब जो होना था सो हो गया, अब तो अपराध की दुनिया में ही मुझे आगे बढ़ना है और वह बिना सोचे-समझे अपराध की दलदली जमीन में गहरे से गहरे धंसता ही चला जाता है। जबकि हमारी संस्कृति में यह बताया गया है कि अच्छा और बुरा दोनों तरह का परिवर्तन व्यक्ति जब चाहे और जितना चाहे कर सकता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, संसार में अनेक ऐसे उदाहरण है जो कि मनुष्य डाकू से संत, हिंसक से अहिंसक, क्रूर से दयालु के रूप में परिवर्तन के सशक्त प्रमाण है। परिश्रम और पुरुषार्थ से किया गया प्रयास कभी असफल नहीं होता।

**गुण-दोषों में परिवर्तन की संभावना**

मनोविज्ञान ने कुछ खोजें की हैं। जैसे कोई बच्चा जन्म से बहुत हंसोढ़ है, हमेशा हंसता रहता है तो मनोविज्ञान यह कहता है कि यह बच्चा बड़ा होकर बहादुर, धैर्यवान, शक्तिशाली होगा। एक दूसरा बच्चा चिड़चिड़ा है और हर समय रोता रहता है।

मनोविज्ञान ने उसके विषय में कहा कि यह बच्चा विकल, निराश, समस्या से भागने वाला, हर बात में मुंह छिपाने वाला बनेगा। अब मनोविज्ञान इतना कहकर रूका नहीं, उसने आगे फिर कहा कि अब ये तो उसकी जैमेटिक स्थिति हो गई, जिससे इसका शुरूआत में परिचय मिल गया। अब जैसी परिस्थितियां इसके सामने आएंगी, जैसा वातावरण मिलेगा, वह अपने को पूरा चेंज कर सकता है। एक बच्चा जो हमेशा रोता ही रहता था। अगर उसे जगाने वाले, दुलार देने वाले, उत्साह देने वाले लोगों का साथ मिल गया धीरे-धीरे उनकी संगति से वह बहादुर होने लग गया। उसका स्वभाव बदल गया। जो बच्चा बचपन का दब्बू था, वह बड़ा होकर बड़ा बहादुर हो गया और जो बचपन का बहुत साहसी बच्चा था, वह बड़ा होकर दब्बू हो गया, क्यों? उसके पीछे उसका परिवेश, वातावरण काम कर गया और सिर्फ वातावरण ही काम नहीं करता है, शिक्षाएं भी काम करती हैं। सिर्फ शिक्षाएं ही काम नहीं करती, बल्कि इसके पीछे साधना भी काम करती है।

जैसे आप लोग देखते हैं कि अच्छा-भला किसी का बेटा था, सारी बातें मानता था, लेकिन पड़ोसी प्रॉपर्टी डीलर के साथ जब से बैठने लगा, उसने उसे अपने पास बैठा-बैठाकर थोड़ा-थोड़ा भड़काना शुरू कर दिया। वह बच्चे को कहता है कि तूने क्या सोचा है- अपनी जिंदगी के बारे में? अब बच्चा कहेगा कि पता नहीं पापा क्या कराने जा रहे हैं? फिर वह कहता है- वे कुछ करने वाले नहीं हैं, इस तरह कुछ भी जीवन में होने वाला नहीं है। मुझे देखो! मैंने करोड़ों कमा लिए हैं, हमारे साथ आकर बैठा करिए, आपको हम कुछ खिलाएंगे-पिलाएंगे, कुछ बताएंगे आगे बढ़ जाओगे, कुछ बन जाओगे, नहीं तो वहीं के वहीं रह जाओगे। अब उसने बहकाना शुरू कर दिया और देखते ही देखते बच्चे का ब्रेनवास कर दिया, आपका 22 साल का बेटा है। आपकी अब तक की सारी शिक्षाएं मिट्टी में मिल गई। एक व्यक्ति ने उसे एक मिनट में पूरा का पूरा चेंज कर दिया और यह कोई जरूरी नहीं है कि वह उसकी बात मानने के बाद वैसा होकर ही रह जाएगा। फिर कोई तीसरा और मिल जाएगा, चौथा और मिल जाएगा और एक के बाद एक ऐसी स्थिति बनती ही चली जाती है।

18 से 28 तक की आयु का एक समय चलता है और 12 से लेकर 18 साल तक का एक समय अलग चलता है। पश्चिम वाले लोग कहते हैं कि टीन एज अपने आप में अलग ही होती है, उसमें व्यक्तित्व का विकास हो रहा होता है। उसमें निराशाएं और उत्साह एक साथ काम कर रहे होते हैं। उसमें अकड़ और नम्रता दोनों साथ-साथ जाग रही होती हैं। उसमें अपनी मैं का विस्तार इतनी तेजी से होता है कि बच्चा हर बात को ऐसा दिखाता है कि जैसे मैंने ये कर दिया, वो कर दिया और वह करता कुछ नहीं है। इतनी सारी बातें मिलाकर बच्चा अपनी तरफ से जोड़ेगा और बहुत बार ऐसा भी होता है कि कई बच्चे लाइफ में इतने कुछ होते नहीं हैं। लेकिन वे अपने भीतर बहुत बड़ी मैं पाले रखते हैं, बढ़ा-चढ़ा के बातें कर रहे होते हैं, लेकिन उनका मस्तिष्क पूरी तरह से बदला जा सकता है। जैसे अच्छे बच्चों की प्रतिभा को संगति प्रभावित करती है और उनके भीतर गलत भावनाएं, विचार भर देती है। वैसे ही अच्छी संगति का भी पूरा-पूरा प्रभाव असर डालता है। बच्चों को अच्छी संगति प्रदान करना उनके बड़ों का कर्त्तव्य है, क्योंकि बच्चे तो बच्चे हैं, उन्हें उतनी समझ नहीं होती, उनका अपना विवेक उतना कार्य नहीं करता। इसलिए उनको सही मार्ग पर ले चलने के हमेशा प्रेरणा दीजिए, उनकी अच्छाइयों के लिए उनका उत्साहवर्धन कीजिए।

***- क्रमश:***

## आर्य समाज बाहरी रिंग रोड़, विकासपुरी में जन्मदिन का आयोजन

जन्मदिन मनाना हमारी अत्यंत प्राचीन परंपरा है। समय-समय पर हमारे यहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महर्षि दयानंद सरस्वती इत्यादि सभी महापुरुषों का जन्मदिन हर्षोल्लास से मनाया जाता है। लेकिन आधुनिक परिवेश में अधिकांशतया: लोग अपने-अपने बच्चों के और परिवारजनों के जन्मदिन पर केक काटकर तथा मोमबत्ती जलाकर और बुझाकर जन्मदिन मनाते हैं। जो कि अत्यंत पाश्चात्य परंपरा का अंधा अनुकरण ही कहलाता है। एक दिसंबर 2019 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आदरणीय प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती वीना आर्या जी का जन्मदिवस पूर्ण वैदिक रीति से मनाया गया। इस अवसर पर प्रधान जी एवं श्रीमती वीना आर्या जी यज्ञ में यज्ञमान बने और सभी उपस्थित आर्य नर-नारियों ने पुष्प वर्षा करके उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। इस रविवारीय सप्ताहिक सत्संग में सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में आर्य जनों को जागृति प्रदान करते हुए अपने वैदिक संदेश में कहा कि प्रत्येक मनुष्य का जीवन किसी न किसी विशेष प्रयोजन के लिए ही होता है। मनुष्य को अपने लक्ष्य और उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करना चाहिए। लेकिन अपने लिए और अपनों के लिए जीवन जीना कोई बड़ी बात नहीं है। आर्य समाज के नियम के अनुसार हमें सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। अपने स्वास्थ्य का, पारिवारिक दायित्वों का खयाल रखते हुए हमें समाज सेवा के लिए भी आगे आना चाहिए। प्रधान जी ने आर्य समाज बाहरी रिंग रोड़ द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए सबका उत्साहवर्धन किया। आर्य समाज की ओर से से प्रधान जी एवं श्रीमती वीना आर्या जी का तथा उपस्थित आर्यजनों का श्रीमती सुनीता पासी जी ने हृदय से आभार व्यक्त किया। ***- वेद प्रकाश, उप प्रधान***

## स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के नए आवास का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

7 दिसम्बर, 2019, नई दिल्ली। आर्यसमाज के मूर्धन्य संन्यासी, सीकर लोक सभा से दूसरी बार सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी को सरकार द्वारा नए आवास दिए जाने पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के समस्त पदाधिकारियों ने शुभकामनाएं प्रदान की। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी के ब्रह्मत्व में गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ कराया गया। यजमान के रूप में दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीना आर्या जी, श्री विनय आर्य जी (महामन्त्री, दिल्ली सभा) एवं कई अन्य आर्यजनों ने सपत्नीक यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने स्वामी जी के द्वारा महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका के निर्वहन की प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी संसद में आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपका महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनुकरणीय और प्रशंसनीय है। इस अवसर पर कई महानुभावों ने स्वामी जी को अपनी-अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। श्री विनय आर्य जी, आचार्य विजयपाल जी, सहित सीकर राजस्थान लोक सभा क्षेत्र से भी कई महानुभावों ने स्वामी जी को शुभकामनाए दी। कार्यक्रम के अन्त में सभी के लिए सुन्दर भोजन का प्रबन्ध था, जिसका सभी ने आनन्द लिया।

## आर्य समाज वसंत विहार में पूनम की पाठशाला कार्यक्रम : आर्य समाज है डी.ए.वी. की माँ - डॉ. पूनम सूरी

आर्य समाज वसंत विहार एवं सूरज भान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वसंत विहार, नई दिल्ली के तत्वावधान में एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें पद्मश्री आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली, ने अपना अत्यंत प्रभावी व ओजस्वी उद्बोधन दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों को पुनः स्थापित करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की है और वेद हर व्यक्ति के लिए है, चाहे वह किसी भी मत-मतांतरण को मानने वाला हो। आर्यसमाज कोई धर्म या मत नहीं है, यह एक वैचारिक क्रांति है। आर्यसमाज डी.ए.वी. की मां है, इस लिए हमें वेद मार्ग को प्रशास्त करना है। हमें बच्चों को संस्कार देने हैं ताकि बच्चे अच्छे संस्कारी, अच्छे नागरिक और अच्छे देश भक्त बन सके न कि शैतान। हमें सिर्फ तकनीकी शिक्षा नहीं देनी अपितु उनको वेद विद्या से उनको संस्कारित करना है और यह कार्य अब प्रधानाचार्य और मुख्य अध्यापकों द्वारा हमारे 923 से अधिक विद्यालयों में आरंभ करने जा रहे हैं। छोटी-छोटी बातों से बच्चों को संस्कार दिए जाएंगे। जिसे हमें सत्य बोलना चाहिए, सत्य का आचरण करना चाहिए, सत्य व्यवहार करना चाहिए व शाकाहार बनना चाहिए। बड़ी सरलता तथा विस्तार से उपस्थित बुद्धिजीवी अध्यापकों को बताया और उन से निवेदन किया गया कि बच्चों को संस्कार दीजिए ताकि बच्चे बड़े होकर अच्छे नागरिक बन सकें व मर्नुभव का सन्देश साकार हो सके। इस कार्यक्रम में आदरणीय श्रीमती वीना आर्य, श्रीमती रश्मि वर्मा, श्रीमती नीरज मेंदीरत्ता, श्रीमती विभा आर्य, श्री मुकेश आर्य, श्री सतीश चड्डा, श्री सुरिन्द्र सूरी जी ने बहुत ही प्रभावी ढंग से अपना उद्बोधन रखा, उनका धन्यवाद! - ***प्रधानाचार्या***

## आर्यसमाज की सेवा संस्था 'सहयोग' द्वारा यज्ञ के आयोजन के साथ वस्त्र वितरण

सर्दी का मौसम है। सब लोग अपने परिवार और बच्चों के लिए गर्म कपड़ों की व्यवस्था पहले से ही कर लेते हैं। लेकिन आज भी कुछ लोग इतने मजबूर है कि गरीबी के कारण मौसम के अनुकूल वस्त्रों की खरीददारी नहीं कर पाते। सर्दी से ठिठुरते अपने बच्चों को देखकर भी वे अपने मन को मसोस लेते हैं। फिर वे आग जलाकर सेकते है या जो भी बन पड़ता है किसी तरह से सर्दी से बचने का प्रयास करते हैं। इस कष्टकारी पीड़ा से जरूरतमंद लोगों को सहायता और सहयोग देने के लिए विख्यात अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग संस्था निरंतर निजात दिला रही है। 7 दिसंबर 2019 को जे ब्लॉक जहांगीरपुरी में मेन रोड़ के ऊपर पीपल के नीचे वस्त्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ। यज्ञ में उपस्थित बच्चे, बुजुर्ग और युवा स्त्री-पुरुषों ने आहुति देकर पुण्य अर्जित किया। साथ ही शिवा शास्त्री ने सरल और सारगर्भित व्यवाहरिक प्रवचन देकर लोगों को समझाया कि जीवन में किस तरह से हम बुराईयों से ऊपर उठें, नशे आदि की बुरी आदतों को छोड़ें और अपने जीवन को सफल करें। इसके बाद उपस्थित जनसमूह को सर्दी के गर्म वस्त्र भेंट किए गए। वस्त्र पाकर बच्चे युवा और वृद्ध अति प्रसन्न दिखाई दिए। प्रेम- सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

## आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की वार्षिक बैठक

### मंगलवार 17 दिसम्बर, 2019 प्रातः 9:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की वार्षिक बैठक **मंगलवार 17 दिसम्बर 2019** को **आर्यसमाज पंजाबी बाग (पश्चिम), नई दिल्ली**-110026 में **प्रातः 9.30 बजे** आयोजित की गई है।

बैठक में भाग लेने के लिए आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध एवं सहयोगी विद्यालयों के अधिकारी - चेयरमैन, प्रबंधक व प्रधानाचार्य /प्रधानाचार्या महोदयों को बैठक का एजेण्डा भेज दिया गया है।

अतः सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

-: निवेदक :-

**सुरेन्द्र कुमार रैली** (प्रस्तोता)

**विनय आर्य** (महामन्त्री)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में

## निःशुल्क स्वाध्याय एवं साधना शिविर

**26 से 30 दिसंबर 2019**

**पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल प्रताप नगर चितौड़गढ, राजस्थान**

दिल्ली सभा के सौजन्य से आचार्य कर्मवीर जी (रोजड़), डॉ. सोमदेव जी शास्त्री (मुम्बई) एवं श्री अमरसिंह जी (ब्यावर)के सान्निध्य में आयोजित शिविर में महर्षि दयानंद सरस्वती कृत पंच महायज्ञ विधि तथा सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास का स्वाध्याय एवं अष्टांग योग के अनुसार साधना का अभ्यास कराया जाएगा। शिवरार्थी 25 दिसंबर की सायं अथवा 26 दिसंबर को प्रातः 7 बजे तक पहुंचने का प्रयास करें और अपने आने की पूर्व सूचना शीघ्र देवे। शिवरार्थियों के लिए पंच महायज्ञविधि, सत्यार्थ प्रकाश और कापी-पेन आदि की प्राप्ति की सुविधा शिविर स्थल पर भी रहेगी। अधिक जानकारी अथवा शिविर में भाग लेने के लिए सम्पर्क करें -

| **देवेन्द्र सिंह शेखावत** | **डॉ. सीमा श्रीमाली** | **सुखबीर सिंह आर्य** |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | आचार्या | मन्त्री, दिल्ली सभा |
| 9414110646 | 9460617008 | 9350502175 |

# Marriage and House Holding

**Continue from last issue**

**Geueral Roles :** Only those males and females should enter the marriage and family life who have completed their comprehensive study of *Vedas,* associated with its allied branches, be that of all the four, or of three, two or one, while observing complete celibacy. After cempleting the education should, marry his opposite member, possessing good qualities and features, with the blessing of the Guru and after taking the ceremonial bath celebrating his graduation, The girl should not belong to the past six gene- rations of his parents, and should not be in the family tree ef his father, more particularly. The daughter is called *"Duhita',* only because she remains happy if she is married afar, and not in the vicinity. In the selection of the families for such purposes, one should be vigilant that these must not be characterless, devoid of the good persons, neglecting the study of Vedas, and having fatal diseases.

**Marriageable Age:** The best marriageable age for a girl ranges between sixteen to twentyfour, while for a man it is between twenty five and fortyeight. If a girl of sixteen marries a boy ot twentyfive, the marriage should be treated as of the lowest order. If the marriageable pair belongs to the eighteen-twenty and thirtyfive-forty years of age-group, it is supposed to be of the middle order. If a female of twenty four marries a man of fortyeight, it belongs to the highest order. Only that country can become happy and prosperous, which provides education associated with Brahmacharya and allows marriage of ideal type.

**Marriage and Freedom :** The marriageable pair should be given free hand for an ideal marriage. The pleasure of the children should be given priority, even while the marriage is arranged by the parents; because it is the former who have main stake in marrying, not their parents. Our country, *Aryavarta* has the age-old tradition of self-selection, which makes up for the best type of marriage. The marrying couple should be matching in their education, humility, character, beauty, strength, family and height etc. Otherwise it does not make a good marriage. Nor the child-marriage delivers happiness.

Our country was making an all round progress, when the Seers, Parents, Rulers etc., married in this self-selective way, and after duly completing their education, associated with full observance of celibacy. Since these practices have been reversed, this country is constantly falling to the lower depths.

**Social Classification:** The marriage should be based on the social classifi- cation, which in its own turn should be based on the qualities, actions and natures of the people. Only the bes educated and good natured people can be called as. Brahmins, while uneducated and unintelligent ones are called as Shudras. *'Manusmrti'* proclaims that this body can be raised to become a Brahmin, if one learns and acts according to the prescribed norms and performs all the prescribed religious duties. Otherwise even it is-seen that a pious and good man has a bad son, while a bad father has a good and pious son. Therefore, it is contrary to the fact to call the practice of accepting and thereby calling is

'ancient'. Such a classification is heredity, only because it has been observed so, only since last five or six generations. The truly ancient practice is that which has been followed by this country since the beginning of the human creation. If this classification is hereditary, then a Brahmain should be treated as such, even after his *conversion* to any other religion. It is therefore that all the legal scriptures prescribe the nature and acts as the sole decisive factor for such a classification.

***To be continued.....***

***With thanks By:***
***"Flash of Truth"***

**प्रथम पृष्ठ का शेष**

## आर्य समाज के प्रेरणा स्तम्भ – अमर हुतात्मा .....

आर्य समाज के सशक्त प्रेरणा स्तंभ अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का 93वां बलिदान दिवस गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 23 दिसंबर 2019, जिसे आर्य समाज 25 दिसंबर को श्रद्धाभाव से मनाता आया है, वह पूरी शक्ति से मनाया जाएगा।यज्ञ होगा, विशाल शोभा यात्रा निकलेगी, विशेष सभा का आयोजन होगा, इत्यादि-इत्यादि।लेकिन इस अवसर पर हमें यह अवश्य समझना चाहिए कि स्वामी श्रद्धानंद जी ने आर्य समाज का जितना प्रचार-प्रसार और विस्तार किया,मानव सेवा के कीर्तिमान स्थापित किए, कहीं न कहीं वे हम सबको प्रेरित कर रहे हैं कि हम भी अपने जीवन में उनसे प्रेरणा लेकर आर्य समाज के लिए कुछ न कुछ ऐसा अवश्य करें, जिससे हमारा जन्म और जीवन सफल हो सके।

**श्रद्धा का सत्य स्वरूप**

त्यागी-तपस्वी और महान बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी का संपूर्ण जीवन दर्शन मानव मात्र के लिए स्तुत्य प्रेरणा का स्रोत है। व्यावहारिक जीवन में अगर किसी की उंगली में भूल से भी सुई की नोक चुभ जाए तो व्यक्ति पीड़ा से कराह उठता है, लेकिन सरहद पर देश की रक्षा के लिए तैनात जवान अपने सीने पर गोली खाकर भी दुश्मन के ऊपर उल्टा प्रहार करता है, हंसते-हंसते शहीद होते हुए "जय हिंद" का नारा उसके मुंह से निकलता है इसी का नाम है सच्ची श्रद्धा, किंतु आजकल अगर कोई स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान दिवस पर आयोजित होने वाली शोभायात्रा के अवसर पर किसी के बच्चे को भाग लेने के लिए प्रेरित करे तो अक्सर घर वाले कहते हैं कि बहुत ठंड है, बच्चा बीमार हो जाएगा, किंतु अपने पुत्रों से गुरुकुल की शुरूवात करने वाले स्वामी श्रद्धानंद ने यह कभी नहीं सोचा कि गंगा के किनारे खुले में, झोपड़ी में रहकर मेरे बच्चे बीमार पड़ जाएंगे, बल्कि उन्होंने अपनी संतान सहित सारी संपदा को आर्य समाज के उत्थान में आहूत कर यह सिद्ध कर दिया कि श्रद्धा का अर्थ है-सत्य को धारण करना और जो श्रद्धा को सही रूप में अपनाता है, वही श्रद्धानंद युग-युगांतरों तक प्रेरणा बनकर सबके दिलों में रहता है। आज आवश्यकता है कि हम स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन से जुड़े प्रेरक सस्मरणों से युवा पीढ़ी को अवगत कराएं और उन्हें बातएं कि स्वामी जी कितने महान थे, उन्होंने किस तरह कठिन से कठिन परिस्थितियों में आर्य समाज को विश्वभर में फैलाने के लिए कार्य किया।

**संकल्प के धनी**

निर्बल व्यक्ति हमेशा विकल्प खोजता है। जबकि वीर पुरुष अपने मन में संकल्प धारण कर उन्हें जी-जान से पूरा करते हैं। इसलिए कहा जाता है कि संकल्प करना आसान है और उसे पूरा करना कठिन कार्य है। स्वामी श्रद्धानंद जी हमेशा कठिन रास्तों का चयन करते हैं। क्योंकि उन्हें पता था कि जो लोग सरल रास्तों का चयन करता है, उनका जीवन कठिन हो जाता है और जो कठिन राह पर चलते हैं उनका जीवन ही सफल हुआ करता है। स्वामी जी जालंधर से लाहौर गए थे और वहीं पर उन्होंने संकल्प धारण कर लिया कि जब तक गुरुकुल की स्थापना के लिए मैं धनराशि एकत्रित नहीं कर लूंगा तब तक अपने घर में प्रवेश नहीं करूंगा और जैसे ही वे लाहौर से लौटकर जालंधर आए तो सीधे आर्य समाज में चले गए और उन्होंने घर में प्रवेश नहीं किया। इस घटना का समाचार जब उनके घर पहुंचा तो विचार कीजिए कितनी वेदना हुई होगी? छोटे-छोटे बच्चे जिनकी मां का भी साथ छूट गया था और अपने पूरे घर का मुखिया इस तरह से अचानक घर में आना ही बंद कर दे तो सोचो उन पर क्या गुजरी होगी? उनके दोनों पुत्र इंद्र जी और हरिशचंद्र जी अपनी ताई जी के साथ जब अपने पिता के पास पहुंचे तो उन्होंने केवल यही कहा कि जब तक गुरुकुल के लिए दानराशि एकत्रित करने का मेरा संकल्प पूर्ण नहीं होगा, तब तक घर में प्रवेश नहीं करूंगा। संकल्प पूर्ण होने के बाद ही घर आऊंगा। महान संकल्प के धनी स्वामी श्रद्धानंद जी ने एक असंभव से दिखने वाले संकल्प को दृढ़ता से पूर्ण किया और गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का उपवन पल्लिवित और पुष्पित कर दिया। जहां से पूरे विश्व में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की वेद की ज्ञानमयी किरणें प्रकाशित होने लगी।

**ईश्वर पर अटूट विश्वास**

अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करने वाले, संपूर्ण धरा पर प्रेम सुधा बरसाने वाले, केवल अपने लिए और अपनों के लिए नहीं, अपितु मानव मात्र के लिए मर-मिटने वाले स्वामी श्रद्धानंदजी का ईश्वर के प्रति इतना अटल और अटूट विश्वास था कि जब वे अत्यंत बीमार थे और उपचार के बाद बीमारी से उबरकर स्वस्थ हो रहे थे तो उन्होंने यही कहा कि अब मेरा शरीर सेवा करने के योग्य नहीं रहा। अब तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि नया शरीर धारण करूं और फिर से मानवता की सेवा करूं। इससे पता चलता है कि उनके जीवन का केवल और केवल एक ही उद्देश्य था मानव सेवा, मानव सेवा, मानव सेवा। ऐसे महान वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी को 93 वर्ष पूर्व 23 दिसम्बर, 1926 को अब्दुल रशीद जैसे कायर ने गोली मारी और वे अमरत्व को प्राप्त हो गए। ऐसे महामना के बलिदान दिवस पर सभी आर्यजनों को यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमारे जीवन का जो समय आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में व्यतीत होगा, मानव सेवा के कार्यों में हमारा जो समय व्यय होगा, वही हमारा अपना कल्याणकारी समय होगा। बाकी समय तो हमारा व्यर्थ में ही व्यतीत हो रहा है। क्योंकि

**लाखों हैं रोज आते, लाखों चले गए,**
**अमृत उन्होंने पाया सेवा के लिए जिए।**
**जब तक रहे धरा पर फूलों की तरह रहे,**
**सेवा-साधना से जीवन धन्य कर गए।।**

**- आचार्य अनिल शास्त्री**

## सम्मान हेतु आवेदन आमन्त्रित

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास ज्वालापुर द्वारा 31 जनवरी 2020 को आयोजित होने वाले विद्वान सम्मान समारोह के लिए विद्वानों से जीवन परिचय (बायोडाटा) आमंत्रित किए जाते हैं। सम्मान प्रदान करने हेतु उन्हीं महानुभावों को वरीयता दी जाएगी जिनकी आय का कोई साधन नहीं है। आवेदन 15 दिसम्बर 2019 तक स्पीड पोस्ट/पंजीकृत डाक से निम्न पते पर पहुंच जाने चाहिए:-

**डॉ. महावीर अग्रवाल**
**माता लीलावती आर्यभिक्षु**
**परोपकारिणी न्यास,**
**22, नन्द विहार, पो. गुरुकुल कांगड़ी**
**हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404,**

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

### आर्य समाज अमर कालोनी का
## 52वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमर कालोनी नई दिल्ली का 52वां वार्षिकोत्सव समारोह 13 से 15 दिसम्बर, 2019 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी विष्वंग जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ एवं श्री भानुपकाश शास्त्री जी के भजन होंगे। महिला सम्मेलन 14 दिसम्बर को 12:30 बजे से एवं समापन 15 दिसम्बर को प्रात: 8 से 1:30 बजे तक आयोजित होगा। – ***ओम प्रकाश छाबड़ा, मन्त्री***

## संस्कार निर्माण एवं आत्म सुरक्षा शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मु-कश्मीर के तत्वावधान में 29 दिसंबर से 5 जनवरी 2020 तक वैदिक वानप्रस्थ आश्रम गढ़ी, उधमपुर में आर्य वीरांगना दल जम्मु-कश्मीर द्वारा संस्कार निर्माण एवं आत्म सुरक्षा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर को डॉ. साध्वी उत्तमा यति जी, आचार्य आशीष जी, डॉ. प्रतिभा पूरंधी जी, सुकीर्ति चौधरी जी, सुवर्चा सुरेश्वरी जी, अर्पणा सेठी जी, मोनिका गुप्ता जी और शिक्षक के रूप में सत्यम आर्य जी का नेतृत्व प्राप्त होगा।

– ***अरुण चौधरी, प्रधान***

### आर्य समाज देव नगर (मुल्तान) का
## वार्षिकोत्सव समारोह

आर्य समाज मंदिर देव नगर द्वारा 12 से 15 दिसंबर तक वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें चतुर्वेद शतकीय यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रीय जी, भजन श्री भानू प्रकाश शास्त्री जी तथा वेदपाठ श्री प्रदीप शास्त्री एवं गौरव शास्त्री द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर 14 दिसंबर को आर्य बाल सम्मेलन एवं 15 दिसंबर को वार्षिक उत्सव का समापन समारोह होगा।

– ***रामविलास सिंह, प्रबंधक***

## झुग्गियों में बांटे स्वेटर व बर्तन

कोटा, 9 दिसम्बर। आर्य समाज कोटा के पदाधिकारी अर्जुनदेव चढ्डा, प्रांतीय प्रचार प्रभारी आर्यसमाज राजस्थान, नरदेव आर्य उप प्रधान, कैलाश बाहेती प्रधान आर्यसमाज रामपुरा, आर.सी. आर्य प्रधान महावीर नगर मंत्री, राधावल्लभ राठौर, चन्द्रमोहन कुशवाह एडवोकेट, पंडित श्योराज वशिष्ठ ने दादाबाड़ी चौराहे के पास स्थित झुग्गी झोंपड़ियों में जाकर मजदूरों के बच्चों को गर्म स्वेटर पहनाए, महिलाओं को घरेलू उपयोग के स्टील के बर्तन तथा बच्चों, महिलाओं, पुरूषों को बिस्कुट के पैकेट वितरित किए।

## आर्यसमाजों में पुरोहित व्यवस्था

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना है कि दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में पुरोहितों की अनिर्वाय नियुक्ति हो। अत: जो महानुभाव दिल्ली में पुरोहित हेतु अपनी सेवाएं देना चाहते हों, वे कृपया अपनी योग्यता एवं अनुभव के प्रमाण पत्रों सहित यथाशीघ्र आवेदन करें। इच्छुक महानुभाव अपने आवेदन पत्र निम्न पते पर भेजें – **संयोजक, प्रचार विभाग**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1100011

पृष्ठ 3 का शेष

## बलात्कार और न्याय : क्या सही....

अगर ऐसा होता तो क्या उन्नाव में ही कुछ महीने पहले एक राजनेता पर आरोप लगे थे कि पीड़िता को गाड़ी में मारने का प्रयास भी किया गया जिसमें उसके एक दो रिश्तेदारों की भी मौत हो गयी थी। लेकिन यहाँ पुलिस और समाज की अलग-अलग प्रतिक्रिया देखने को मिली थी। जहाँ पुलिस आरोपी विधायक को गिरफ्तार करने में भी कमजोर दिखाई दे रही थी वही समाज का एक हिस्सा उन्नाव की सड़कों पर बेनर लेकर घूम रहा था कि हमारा विधायक निर्दोष है? फटाफट न्याय प्रक्रिया पर यदि एक मामले को और देखें तो गुडगाँव साल 2017 में रेयान इंटरनेशनल स्कूल के प्रद्युम्न मर्डर केस में शुरूआती जाँच में पुलिस द्वारा बतौर आरोपी स्कूल बस चालक ड्राइवर पकड़ा गया था। जिसने किसी दबाव में अपराध भी स्वीकार कर लिया था। लेकिन बाद में सीबीआई जाँच हुई तो मामले में स्कूल का ही ग्यारवीं कक्षा का छात्र निकला इसलिए जरुरी नही सभी मामले फटाफट निपटाए जाएँ।

जिस तरह आज अनेकों निर्वाचित प्रतिनिधि, राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता न्याय का माहौल बना रहे है महिलाओं को समझा रहे है कि जाइये आपको न्याय मिल गया है। क्या कल जब कोई राजनितिक दलों से जुडा नेता या कथित धार्मिक गुरु या बाबा बतौर अपराधी पकड़ा जायेगा तो क्या उसके लिए भी यही माहौल होगा? शायद नहीं! क्योंकि आसाराम से लेकर राम रहीम, रामपाल हो या नित्यानंद रहा हो हमने समाज और राजनीति को बंटते हुए उनके लिए मरते हुए देखा है। इसलिए हैदराबाद के न्याय पर जश्न जरुर मनाइए लेकिन उससे अधिक एक सामाजिक माहौल का निर्माण कीजिये जिसमें बलात्कारी और उसका परिवार का सामाजिक बहिष्कार किया जाये। पीड़िता का साथ दीजिये, हमें न्याय, स्वतंत्रता और एक सभ्य समाज को गरिमा से पाने के लिए इस विषय पर गंभीरता से सोचता ही होगा क्योंकि इसका और कोई विकल्प नहीं है।

हाँ लानत है आज मानवाधिकार संस्था पर जो इन्हें बलात्कारी निहत्थे नजर आये लेकिन इन्हें ये नजर नहीं आता कि निर्भया, दिशा और इन जैसी तमाम बेटियाँ भी निहत्थी और बेगुनाह होती हैं जब उन्हें नोचा जाता है, जिंदा जलाया जाता है, हो सकता हैं हैदराबाद पुलिस ने कानून तोड़ा हो! लेकिन महाभारत में भी धर्म स्थापना के लिए कई बार परम्परागत नियम तोड़े गये थे ताकि पापियों से भूमि मुक्त हो।

– ***राजीव चौधरी***

## 90वां वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्य समाज बिडला लाईस कमला नगर द्वारा 27 से 29 दिसंबर 2019 तक 90वां वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जाएगा। सामवेदीय यज्ञ पं. कुंवरपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में तथा वेदपाठ श्री सर्वानंद गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ ब्रह्मचारियों द्वारा होगा। भजन श्री दिनेशदत्त आर्य एवं गौरव आर्य के होंगे। 28 दिसंबर को आर्य महिला सम्मेलन एवं 29 दिसंबर को पूर्णाहुति एवं समापन समारोह प्रात: 9:30 से 1:30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। डॉ. छवि कृष्ण शास्त्री, श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली सभा के प्रवचन होंगे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य (सभा प्रधान), मुख्य अतिथि डॉ. हर्षवर्धन जी (केंद्रीय मंत्री), विशिष्ठ अतिथि श्री जोगीराम जैन (निगम पार्षद), श्री अरविन्द गर्ग जी (जिलाध्यक्ष भाजपा) आदि महानुभावों की गरिमामय उपस्तिथि रहेगी। – ***मन्त्री***

### गुरुकुल गौतम नगर का
## 86वां वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली का 86वां वार्षिकोत्सव एवं 40वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ 16 दिसम्बर, 2019 से 5 जनवरी, 2020 तक सम्पन्न होगा। यज्ञ का समय प्रथम दिन प्रात: 8 से 11:30 बजे तथा अन्य दिनों में प्रात: 7 से 9:30 बजे रहेगा। सायंकाली यज्ञ 3 से 5:30 बजे तक प्रतिदिन होता रहेगा। समापन एवं भण्डारा 5 जनवरी, 2020 को प्रात: 8 बजे से आरम्भ होगा।

– ***स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्राचार्य***


## ध्यान शिविर

**(15 से 22 दिसम्बर, 2019)**

आचार्य सत्यजित् जी आर्य के मार्गदर्शन में

★ ध्यान क्या है? ★ पूर्ण मौन
★ ध्यान क्यों करें? ★ आदर्श दिनचर्या
★ध्यान कैसे करें? ★ शंका समाधान

ध्यान व आध्यात्मिक उन्नति के अनुकूल शान्त-सुरम्य-शुद्ध वातावरण

**इच्छुक व्यक्ति कृपया सम्पर्क करें**

**वानप्रस्थ साधक आश्रम**

आर्यवन, रोजड़, पो.-सागपुर, साबरकाठा, (गुजरात) - 383307
Web :vaanaprastharojad.com
Email : vaanaprastharojad@gmail.com


शोक समाचार

## श्री बलदेव सचदेवा जी का निधन

आर्यसमाज डी ब्लाक, विकासपुरी के कार्यकारी प्रधान एवं पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री बलदेव सचदेवा जी का लगभग 61 वर्ष की आयु में 5 दिसम्बर, 2019 को रात्रि लगभग 9 बजे हृदयघात से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 6 दिसम्बर को पूर्ण वैदिक रीति से तिलक विहार स्थित शमशान घाट में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारकों द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा महर्षि दयानन्द वाटिका, निकट आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी में 8 दिसम्बर, 2019 को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, महामन्त्री श्री सतीश चड्डा, मेयर श्रीमती सविता जिन्दल, प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रकाश कथूरिया, समस्त वेद प्रचार मंडलों के अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के पदाधिकरियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## श्रीमती अमिता चड्डा जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के संरक्षक, आर्यसमाज कीर्ति नगर के वरिष्ठ सदस्य श्री सतपाल भरारा जी की सुपुत्री एवं श्री अजय चड्डा जी की धर्मपत्नी श्रीमती अमिता चड्डा जी का दिनांक 5 दिसम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 7 दिसम्बर को श्रीराम मन्दिर गुजरांवाला टाउन में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## माता सुलक्षणा गुप्ता का निधन

आर्यसमाज पश्चिम विहार की वरिष्ठ सदस्या एवं यज्ञ ब्रह्मा के रूप में प्रतिष्ठित माता सुलक्षणा गुप्ता जी का 8 दिसम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 10 दिसम्बर को आर्यसमाज पश्चिम पुरी, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक**

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 05-06 दिसम्बर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 दिसम्बर, 2019

## भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

### इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

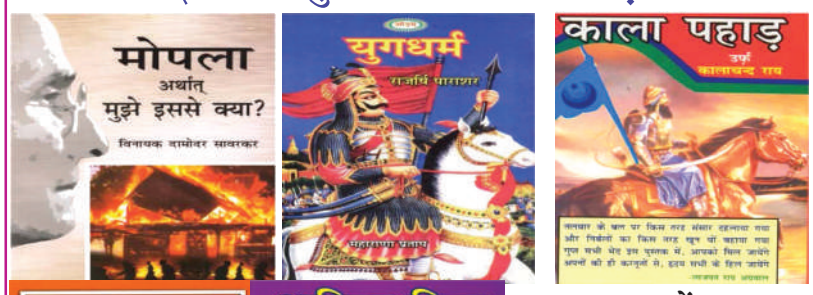


पुस्तकें
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001
मो. 9540040339

*प्रतिष्ठा में,*

### दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
### वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अत: समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण '**सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका**' के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर प्रेषित करें। - ***महामन्त्री***

**आर्यसमाज आर्यनगर पहाडगंज एवं अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा**

## 93वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

**22-23 दिसम्बर, 2019**

आर्यसमाज आर्यनगर पहाडगंज एवं अ. भारतीय दलितोद्धार सभा द्वारा संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी का 93वां बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को प्रात: 8 से 12:30 बजे तक आर्यसमाज परिसर में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा एवं वक्ता आचार्य भद्रकाम वर्णी जी होंगे।

*-विजय कपूर, प्रधान*

खुशखबरी! खुशखबरी!!

## दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
## वर्ष 2020 का कैलेण्डर प्रकाशित

**मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा**

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

**व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग**
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

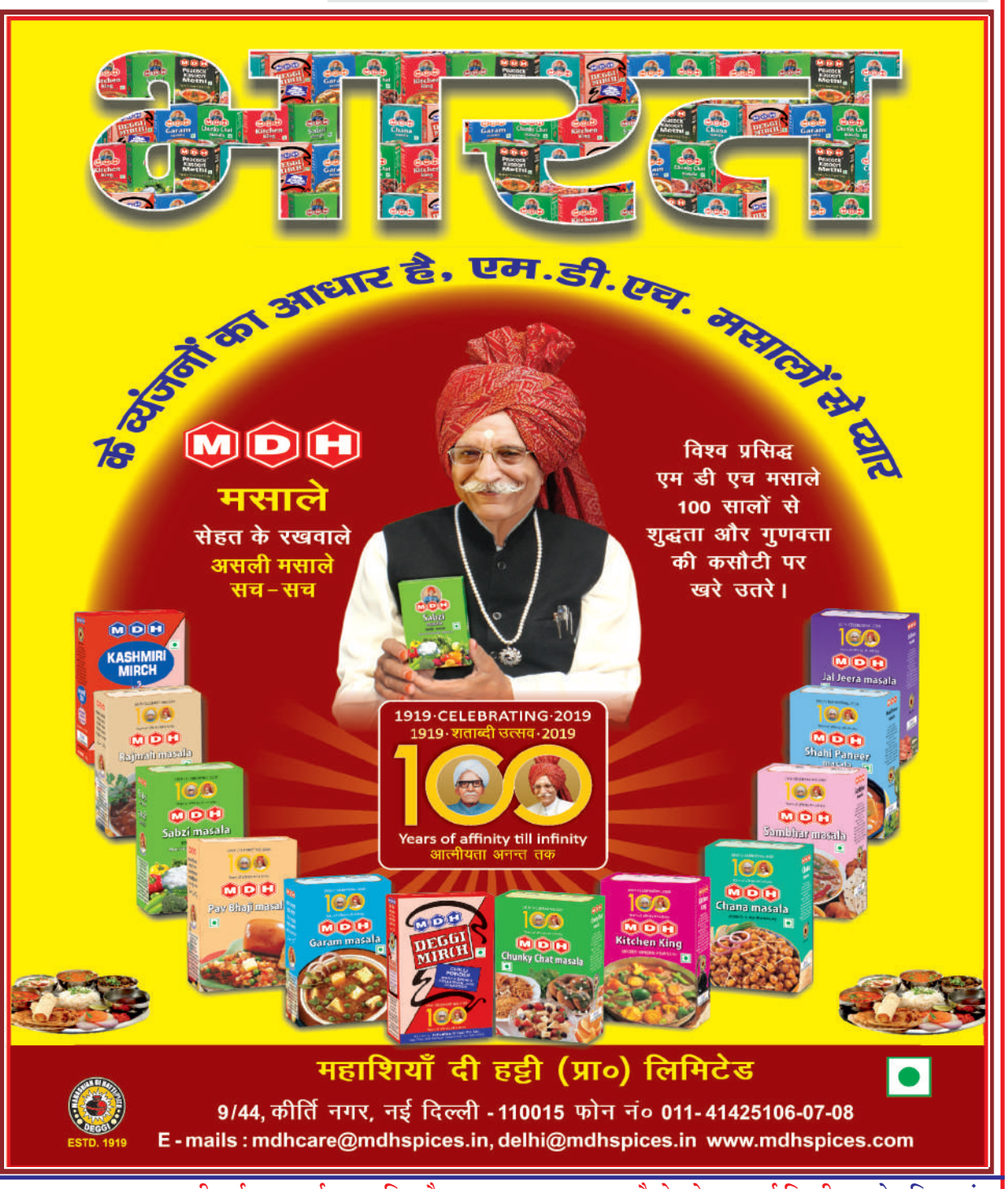


दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह